# लुटेरों का टीला
# चंबल

रवि रंजन गोस्वामी

लुटेरों का टीला, चंबल

Publishing-in-support-of,

**FSP Media Publications**

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

**Website:** *www.fspmedia.in*

---

**© Copyright, Author**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

**ISBN:** 978-81-19927-53-1

**Price:** ₹ 165.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

# लुटेरों का टीला, चंबल
# एक लघु उपन्यास

रवि रंजन गोस्वामी

# अधिसूचना

"यह लघु उपन्यास पूर्णतया काल्पनिक है। इसके सभी पात्र, संस्थाएं और घटनाएँ लेखक की कल्पना से गढ़ी गईं हैं। लुटेरों का टीला भी एक काल्पनिक स्थान है। इसको लिखने का उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन है।"

**–लेखक**

# लेखक के बारे में

लेखक, रवि रंजन गोस्वामी का जन्म 03, 05, 1961 को झाँसी में हुआ। इन्होंने बी.एससी. की शिक्षा बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी से और एम.एससी. की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से पूर्ण की। वर्तमान में वे भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

विद्यार्थी काल से ही गोस्वामी जी को पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानी, कविताएँ पढ़ने–लिखने का शौक था। इनके द्वारा लिखित लुटेरों का टीला उपन्यास अत्यन्त मनोरंजक है, जो उम्मीद है आपको जरूर पसंद आयेगा।

गोस्वामी जी की अन्य प्रकाशित पुस्तकों में संवाद (कविता संग्रह), इट सो हैप्पेंड (शॉर्ट स्टोरी कलेक्शन) और द गोल्ड सिंडीकेट शामिल हैं।

# समर्पण

## केश और दिविता

# एक अफवाह 1

1 दिसंबर 1982, सर्दियों के दिन अपरान्ह 2.30 का समय, मैं अपने एक ख़ास दोस्त राजेश की साईकिल पर आगे बैठा था। राजेश साईकिल तेज़ चलाने की कोशिश में तेज़ी से पैडल मारता हुआ हांफ सा रहा था। सर्दियों के दिन थे, किन्तु हम दोनों के माथे पर पसीना था। इसकी एक वज़ह ये थी कि, हम लोग गरम कपड़ों से लदे हुए थे, दूसरा डर था कि सिनेमा के मैटनी शो के लिये देर न हो जाये। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कारण जिससे हम आशंकित भी थे और उत्तेजित और उत्सुक भी थे वो ये कि, फूलनदेवी इलाईट सिनेमा में बुर्का पहनकर पिक्चर देखने आने वाली थी। ऐसी अफवाह हमनें सुनी थी। हम लोग इलाईट सिनेमा ही जा रहे थे, जिसमें अमिताभ बच्चन की फिल्म नमक हलाल लगी थी। उस समय हम लोग अपनी किशोरवय में थे और हमारी कल्पनाओं के घोड़े बड़ी तेज़ गति से दौड़ते थे।

बहमई हत्याकांड के बाद और फूलनदेवी के आत्मसमर्पण के पहले उनके बारे में विभिन्न प्रकार की अफवाहें उड़ती रहीं थीं।

लक्ष्मीबाई पार्क से थोड़ा आगे पहुँचते ही इलाईट चौराहे पर लगी नेहरु जी की प्रतिमा का आकार दिखने लगा। कुछ ही मिनटों बाद हम दोनों इलाईट टाकीज़ के पास थे। हम लोग टाकीज़ के बाहर एक तरफ खड़े होकर आपस में विचार करने लगे कि पिक्चर देखी जाये या नहीं। टिकट की लाइन में कुछ बुर्का पहने महिलायें भी खड़ी थीं। तभी वहाँ एक पुलिस की जीप आकर रुकी। दोनों ही बातें एकदम सामान्य थी, लेकिन उस दिन हर बुर्के वाली महिला में हमें फूलनदेवी का शक हो रहा था और ऐसा लग रहा था कि पुलिस की उपस्थिति भी फूलनदेवी को पकड़ने के लिये ही है। अपराधियों और पुलिस की मुठभेड़ों के रोमांचक किस्से हमनें पत्र–पत्रिकाओं में पढ़ रखे थे। हम लोग वास्तव में डर गये कि कहीं पुलिस और फूलनदेवी की मुठभेड़ हो गयी और हम उसके बीच में फंस गये तो? हम लोगों की वहाँ पिक्चर देखने की हिम्मत नहीं हुई। हम लोगों ने वहाँ से थोड़ी दूर स्थित नटराज सिनेमाहाल में एक दूसरी फिल्म देखने का निर्णय लिया।

फरवरी 1983 में फूलनदेवी ने आत्मसमर्पण कर दिया। तब फूलनदेवी के बारे में अफवाहों का सिलसिला ख़त्म हुआ। अब उनके जीवन और अतीत के बारे में लोगों को अधिक जिज्ञासा थी।

जिज्ञासा मुझे भी थी। मैं फूलनदेवी को देंखना चाहता था, क्योंकि अख़बारों में हमेशा उन्हें दस्यु सुन्दरी या डाकू रानी संबोधित किया जाता था।

समर्पण के बाद पहली बार फूलनदेवी की फोंटो अख़बार में छपी। फोटो में एक कमसिन सी छोटे कद की लड़की पैंट–शर्ट पहने हाथ में बंदूक लिए और माथे पर कपड़े की पट्टी बांधे खड़ी थी। देखकर रोमाँच हुआ और आश्चर्य भी, कि इसने अपने साथ हुईं ज़्यादतियों का बदला लेने के लिए बीस आदमियों की एक साथ हत्या कर दी थी। पहले फूलनदेवी की एक डरावनी शक्ल कल्पना में थी। हालांकि मीडिया उसे दस्यु सुंदरी लिखा करता था। फूलनदेवी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार माध्यमों के लिये जिज्ञासा और आकर्षण का केंद्र थी और उसे कुछ राजनीतिक और सामाजिक संगठनों की सुहानुभूति और समर्थन भी प्राप्त हुआ।

फूलन के समर्पण के बाद कुछ समय शांति रही। थोड़े समय बाद चम्बल के बीहड़ो में वर्चस्व का नया संघर्ष प्रारंभ हुआ।

फूलन को मिली शोहरत, सुविधायें सहानुभूति और राजनीतिक सहयोग देखकर कुछ दस्यु और दस्यु सुंदरियाँ कुछ बड़ा कर गुज़रने की सोचने लगे।

# सात वर्ष बाद 2

मैं बुन्देलखंड विश्वविद्यालय झाँसी से प्रथम श्रेणी में स्नातक की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् भारतीय सिविल सर्विस की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करता रहा था। दूसरे प्रयास में मेरा चयन भारतीय पुलिस सेवा में हो गया। ट्रेनिंग के बाद मेरी पहली पोस्टिंग सहायक पुलिस अधीक्षक के पद पर ग्वालियर में हुई। मेरे गृह–नगर झाँसी के इतने पास पोस्टिंग की मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मैं खुश था, लेकिन मुझे दस्यु उन्मूलन अभियान में लगा दिया गया। इससे मेरा परिवार खुश नहीं था। मेरे परिवार के सदस्य मुझ पर प्रशासनिक सेवा के लिये प्रयास करने के लिये जोर डालने लगे। मेरा खुद का लक्ष्य भी प्रशासनिक सेवा ही था, लेकिन इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि, इतना समय मिलेगा क्या कि मैं पढ़ सकूं। खैर पहले जो मेरी ड्यूटी थी उसे निभाना था।

मैंने डाकुओं के बारे में बहुत से किस्से बचपन में सुने थे। उनमें से अनेक कहानियों में डाकुओं को बहादुर, विद्रोही और गरीबों के प्रति सहानुभूति वाला बताया गया था। किसी कालखंड में कुछ लोग व्यवस्था के विरोध में

बागी बनें थे। समाज और शासन ने उन्हें दस्यु या डाकू कहा। चम्बल के डाकू विशेष तौर पर खुद को बागी कहलाना अधिक पसंद करते थे।

दुर्दांत डाकुओं की क्रूरता के किस्से भी कम नहीं थे। चम्बल के बीहड़ डाकुओं के कारण जग प्रसिद्ध थे। चम्बल क्षेत्र की भौगोलिक और सामाजिक स्थिति का इस क्षेत्र को हमेशा दस्यु प्रभावित रखने में बड़ा हाथ था।

मैंने ग्वालियर में नया दायित्व लेने का निर्णय किया और ग्वालियर जाकर अपना पदभार ग्रहण कर लिया। मुझे नहीं पता था जिस दस्यु उन्मूलन अभियान में मुझे लगाया गया था, उसमें असली कार्य प्रारम्भ करने से पहले ही मेरा डाकुओं से कुछ अजीबो–गरीब हालात में सामना होगा।

# दोस्त की बारात में 3

मेरे ग्वालियर पहुँचने के पहले सप्ताह में ही मुझे अपने एक पुराने सहपाठी और मित्र रमेश के विवाह का आमंत्रण मिला। बारात मोरैना जानी थी। रमेश ग्वालियर के एक धनाढ्य व्यक्ति सेठ गिरधारी का बेटा था।

बारात के प्रस्थान से पहले.....

सेठ गिरधारी के घर में बहुत चहल–पहल और रौनक थी। हो भी क्यों न उनके बड़े बेटे रमेंश चन्द्र की शादी थी। दूर के और पास के सभी नाते रिश्तेदार आये हुए थे। मेहमानों के स्वागत सत्कार का ज़िम्मा उन्होंने अपने छोटे भाई कृष्ण गोपाल और छोटे बेटे सुरेश चन्द्र पर छोड़ रखा था। अगले दिन बारात ग्वालियर से मोरैना के लिए रवाना होने वाली थी। लगभग सारे मेहमान आ चुके थे, लेकिन वह व्यक्ति जिसका सेठ को बेसब्री से इंतज़ार था, अभी नहीं आया था। घर में हल्दी की रस्म हो रही थी। ये सब घर की महिलाओं ने संभाल रखा था। सेठ अपनी बैठक में बैठकर बेसब्री से उसके फोन का इंतज़ार कर रहे थे। वह व्यक्ति था जिम्मी, सेठ गोपीनाथ का हमराज़ और दाहिना हाथ। सेठ गोपीनाथ गिरधारी के

ख़ास मित्र थे। गिरधारी पुराने जेवरों के अलावा चढ़ावे की रस्म के लिये दस लाख रुपये के आधुनिक जेवर भी ले जाना चाहता था, इसका प्रबंध जिम्मी के ज़िम्मे था। वह स्वयं उसे कई बार फोन लगा चुके थे, लेकिन न जाने क्यों उसका फोन व्यस्त रिंगटोन सुना रहा था।

इसी बीच किसी ने आकर बताया कि लड़की वाले तिलक लेकर आ गये हैं। वर, वधू दोनों पक्षों की सहमति से तिलक और विवाह के बीच अंतराल बहुत कम रखा गया था। जिससे मेहमान एक बार में ही तिलक और विवाह दोनों में शामिल हो सकें। ख़ास तौर से दूर से आने वाले मित्र और नाते रिश्तेदार। रस्में भी सभी नाम मात्र को करनी थी। अभी कुछ दिनों पहले ही ये रिश्ता आया था। परिवार अच्छा और सम्पन्न था। लड़की सुंदर और पढ़ी लिखी थी। सबसे बड़ी बात, रमेश ने अनेक रिश्ते ठुकराने के बाद इस प्रस्ताव के लिए हामी भरी थी। लड़के और लड़की की जन्म कुंडलियों का मिलान कर पण्डित जी ने यही सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त बताया था, वरना फिर अगला मुहूर्त एक वर्ष पश्चात् आना था। सेठ गिरधारी ने वधू पक्ष से आए सभी लोगों का समुचित स्वागत–सत्कार किया। तिलक की रस्म सम्पन्न हुई और उसके बाद वधू पक्ष के लोग भोजन कर वापस चले गए। उन्हें दो दिन बाद उनके यहाँ बारात के स्वागत–सत्कार और विवाह की तैयारियाँ करनी थी।

इस बीच जिम्मी जेवरात ले आया। बारात में साथ ले जाये जाने वाले सामान में कुछ संदूकें थी। उनमें से एक नीले रंग की संदूक में जेवर सम्भाल के रख दिए गये।

श्री रामचंद्र की जय, बजरंग बली की जय के जय कारे के साथ दोपहर बारह बजे बारात की बस मोरैना के लिये रवाना हुई। स्थानीय प्रथा और सुरक्षा के

# लुटेरों का टीला चंबल

लेखक, रवि रंजन गोस्वामी का जन्म ०३, ०५, १९६१ को झाँसी में हुआ। इन्होंने बी.एससी की शिक्षा बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी से और एम.एससी की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से पूर्ण की वर्तमान में वे भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

इनके द्वारा लिखित लुटेरों का टीला लघु उपन्यास अत्यन्त मनोरंजक है, जो उम्मीद है आपको जरूर पसंद आयेगा।

गोस्वामी जी की अन्य प्रकाशित पुस्तकों में संवाद (कविता संग्रह), इट सो हैप्पेंड (शॉर्ट स्टोरी कलेक्शन) और द गोल्ड सिंडीकेट (उपन्यास) शामिल हैं।

लेखक से संपर्क हेतु:
goswamirr@hotmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-53-1
9 788119 927531